بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله — ان الدين عند الله الاسلام

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

16 February 2018
(29 Jamad'ul Awwal 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

"पिता और पुत्र की स्थिति"

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों , (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **"पिता और पुत्र की स्थिति"**

"पिता और पुत्र की स्थिति"

पवित्र पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) ब्रहमांड के लिए उत्तम आदर्श है। वह ऐसे समय में आये जब लोग जंगली थे और पारिवारिक रिश्तों के प्रति बहुत कम सम्मान रखते थे। आज के लिए, मैंने आज आपके लिए, पिता की स्थिति के महत्व के बारे में बात करने के लिए चुना है।

अच्छा चरित्र, अच्छा व्यवहार और अच्छी सलाह ऐसे गुण हैं जो निर्माता को संतुष्ट करेगा। एक हदीस के अनुसार, पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने कहा कि वह जो अपने पिता को राजी करता है , वह अल्लाह को संतुष्ट करता है। जब पिता (शरीयत का पालन करता है) खुश है, तब यह सृष्टिकर्ता को बहुत प्रसन्न करता है।
दूसरी ओर, यदि पिता खुश नहीं है, तो यह निर्माता को संतुष्ट नहीं करेगा। यह दर्जा प्रत्येक पिता को दिया गया है। अगर ऐसी हैसियत हमारे पिता को प्रदान की गई, (तब कल्पना करें) (यानी कितना भव्य है) पवित्र पैगंबर (स अ व स) के पिता, हज़रत अब्दुल्ला (र अ) को क्या दर्जा दिया गया?

पवित्र पैगंबर (स अ व स) के जैविक पिता, हज़रत अब्दुल्ला (र अ) ने पवित्र पैगंबर (स अ व स) के जन्म से पहले ही इस दुनिया को छोड़ दिया । अल्लाह (त व अ) की तमन्ना यह रही की पवित्र पैगंबर (स अ व स) सभी विश्वासियों के लिए हर कोनों और पहलुओं मे एक उदाहरण प्रस्तुत करें । इस तथ्य के बावजूद कि अल्लाह के दूत (स अ व स) ने अपने जैविक पिता को नहीं देखा, निर्माता ने उसे एक दत्तक पिता दिया जो उसके पास असली पिता की तरह है। पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने उन्हे बड़े ही प्यार से ,प्यार करते थे और उन्हे एक महान स्वागत और सम्मान दिया, इतना कि उन्होंने उनको प्रकाश का मार्गदर्शन कराने के लिए उन्हे अंधकार से हटा दिया और वह एक इनाम के रूप में स्वर्ग में होंगें।

पवित्र पैगंबर (स अ व स) के दत्तक पिता हजरत हारिस (र अ) ने एक बार पवित्र कुरान के रहस्योद्घाटन {इल्हाम} के बाद मक्का मे उनसे मुलाकात की । हजरत हारिस (र अ) की नज़र में, कुरैश जो विश्वासघाती थे उन्होंने बताया कि उनके बेटे ने कहा था कि उसके बाद सांसारिक जीवन के बाद, एक और जीवन होगा और उसके बाद अंतिम निर्णय का दिन आएगा, प्रत्येक व्यक्ति के कार्य / कर्म उन्हें स्वर्ग या नरक तक ले जाएंगे।

अच्छे विश्वासी निर्माता के दायरे में होंगे, जबकि गैर-विश्वासियों को आग में फेंक दिया जाएगा ।उनके अनुसार, यह ही (यानी नबी का मिशन) उनकी एकता टूटने का कारण बन गई।

हज़रत हारीस (र अ) (उस समय) ने अभी तक इस्लाम को नहीं अपनाया था। वह पवित्र पैगंबर (स अ व स) को उनकी सेवा करने के लिए, उन्हें मिलने गया। जिस तरह से पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने अपने दत्तक पिता का स्वागत किया, वो बहुत ही विनम्र,और अनुकरणीय था। हज़रत हारिस (र अ) ने पवित्र पैगंबर (स अ व स) को बताया, कि कुरैश ने उन्हे मृत्यु के बाद के दूसरे जीवन के बारे में और उनकी एकता के टूटने के बारे में क्या बताया था। पवित्र पैगंबर (स अ व स) की प्रतिक्रिया एक वाक्य में हज़रत हारीस (र अ) पर इतना बड़ा प्रभाव पड़ा कि यह (कह) उनके दिल में एक प्रकाश के रूप में प्रवेश किया, जिससे उन्हें एक अटल विश्वास मिला ।पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनका संदेश सत्य है और इस महान दिन पर, न्याय के दिन, वह उसे (यानी उनके दत्तक पिता) को हथेली पे यह कहते हुए ले जाएंगे , कि उन्होने पृथ्वी पर जो कुछ कहा, वह सत्य था। यह वाक्यांश पृथ्वी और आकाश से गंभीर माना जाता था। आखिर, यह सिर्फ ऐसे ही कोई भी वाक्य नहीं था, लेकिन यह एक ,जो पवित्र पैगंबर (स अ व स) के पवित्र मुंह से आया था। इस वाक्य के गंभीरता ने उन्हें आस्तिक बना दिया |

यह हमें पवित्र पैगंबर (स अ व स) और उनके दत्तक पिता के बीच एक मजबूत संबंध का उदाहरण दिखाता है | (तब कल्पना करें) की यदि उनके जैविक पिता अगर जीवित होते , तो उनका व्यवहारअपने जैविक पिता की ओर कैसा रहा होगा? हालांकि, उनके दत्तक पिता
गलत मार्ग में थे, वह आस्तिक नहीं थे , लेकिन पवित्र पैगंबर (स अ व स) के उनके प्रति अच्छे व्यवहार ने उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ाया।

पुत्र का कर्तव्य

यह एक अच्छा उदाहरण है, जो आज के समाज पर लागू होना चाहिए। अगर पिता 'शिर्क 'या अन्य पाप भोगता है , तो पुत्र का कर्तव्य है सही

मार्गदर्शन कराना और पिता को सही दिशा में लाना है । एक बड़ा इनाम उस बेटे का इंतजार करता है जो एक पिता को , जो अंधेरे में है, उसे विश्वास करवाने में सफल होता है।

प्रकाश पाए जाने के बाद, हज़रत हारिस (र अ) की प्रतिक्रिया का वजन बहुत भारी था (उनकी प्रतिक्रिया माप से परे थी)। पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने उस दिन को न्याय के दिन से जोड़ा, पवित्र पैगम्बर (स अ व स) कहेंगे कि जब तक वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं करते है वह इसे अपने हाथ से जाने नहीं देंगें। इस प्रकार, यह हमें इस कहावत की ओर ले जाता है : की ईमान (विश्वास) अकीदा (हठधर्मिता) है। पवित्र पैगंबर (स अ व स) ने उन्हें हाथ पकड़कर स्वर्ग में प्रवेश करने का साधन दिया (दृढ़ता से)।

वर्तमान समाज को इन पैतृक बंधों ,का उदाहरण लेना चाहिए; ऐसा करने से, वहाँ और अंधेरा नहीं रहेगा। वहाँ 'शिर्क' के लिए कोई जगह नहीं होगी और यह एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज होगा, जहाँ निवास करना अच्छा रहेगा। यह बेटे का (या यहां तक कि बेटी का) कर्तव्य है, की पिता को सही मार्ग में वापस लायें और इसके विपरीत, बेटा (या बेटी) अगर गलत दिशा / मार्ग में है।

इस संदेश को सहाबायें, ताबे-इन, स्वालिहीन,आरिफीन, मुत्तक़ीन और अन्य पवित्र व्यक्ति वादा किये गए मसीह हज़रत मिर्ज़ा गुलामअहमद (अ.स.) और मुजद्दिदें (सुधारक) , जो उनके बाद आए ,उनको भूले बिना और वादा किए गए मसीह (अ स) । वादा किए गए मसीह (अ स) के आने से पहले मुजादिदों के बीच,उधर हज़रत अब्दुल कादिर जिलानी (अ.स.) जैसे उत्कृष्ट गुरु थे और वे अपने समय के मार्गदर्शक थे। उन्होंने चार बार शादी की और उनके ४९ बच्चे (लड़के और लड़कियां) थे और तो और, पिता और बच्चों के बीच का रिश्ता बहुत करीबी था, सौहार्दपूर्ण और अनुकरणीय था। और वादा किए गए मसीह (अ.स.) के बच्चों में, वे सभी धार्मिक थे, और उनमें से एक - वादा किया गया बेटा और सुधारक था - जो उनके सम्मान और मिशन के लिए परम सुख और समृद्धि लाया; जो एक जैविक और
आध्यात्मिक विरासत है।

तो, यह बेटे का अपने पिता की अच्छी देखभाल करना, उसका विशेषाधिकार है और इसके विपरीत है। एक अच्छा पिता, ज्यादातर वक्त , अच्छे बच्चों को पैदा करते हैं और अच्छे बच्चे विस्मित होते हैं और अल्लाह (त व अ) को संतुष्ट करने के लिए भरोसा और पिता का दोषनिवृत्ति करते है।

अल्लाह हमारे प्रमुखों और गुरु मुहम्मद (स अ व स) पर और उनके प्रिय पिता (अब्दुल्लाह और हारीस) पर अपने कई आशीर्वाद और एहसान भेजें और सभी लोग जो उन्हें प्रिय थे और उनके संदेश में ईमानदार विश्वासी थे। अल्लाह भी हमें उनके ईमानदार अनुयायियों में से एक मानें और हम हमेशा पृथ्वी पर हमारे जीवन भर उनके आदर्श उदाहरण का पालन करें।

इंशा-अल्लाह, आमीन।